ठेर श्रुका हरे शुक्या राष्ट्रा मुक्या हरे हरे पेक्रीहीश्रह दूर देन मिन्ने पेक्र विकास विकार हो हैन राम है। हार क ह्य सम सम सार हो हो हो माना चार् Lings 16 山田:河南田山 ात्राति। भार PANET : WE चिम्स्यीयवक्ष्यसर्गर्स्यङ्गः सन्ध्यं सीमरामि नम्बरः चेही मीबी होमा गुनी सीसरमिवरी हु जुन बार्म रूपण्ठितिनयण शास्त्र कारण्य ।।। जनमेठण व 38 लाइनाय किन् विविंग्नव्यित्रण्यं मान्यन युन् करा किन्ति। हिनंत्रिनिहद्विष्ठिणम् उद्ग्रम् यूने उत्त किः। हिन्ति हमन्। हिने ह युनरिमिनिएसे मुभारक्तिभाषः मिष्।। जिन्निवरा मिनेसुन मिन्याम्बन्मविष्यून भन्या द्वारा विम्तिका वेने पडने मिन्निया हिस्य मानि नरः । रिन्मिना स्वः पुना 

多明中

2

धि मुल्एनभी।। बर्दे पुरिन्यन्क लक् क्रमित्रमभी साइन्यक रमहंयस्यिनुभगणीनुगां नुज्ञणमन्त्रुग् गुरुतिः म् अपन्येन्यानं विद्रार्ध्य द्रास्त्रीय विष्टिं मेळने वृष्ट्रासे मे व्क्ष्याद्विष्ट्याद्विष्ट्याया विनयन्ति स्पद्रविष्ट्र वर्षिनमीहरमा वस्पिव्यवम्सव्यक्तिकारणान्। मुक्रेय्स्यभाभीनेष्वा वक्कित्यु भनः लिन्दिष् उद्दर्भ वनु पृष्टि वस व प्राप्ति । हा दूरी क न समिति वे स्वा ल्यार्ग्निव्दल्यम् यमित्र्यस्त्रभनन्य दृष्यम् उत्तर्नायं स्टम्माणि द्वाव प्रमान्य द्वा है।

यन्त्रीत्येष्य्ययुगः वनुजनम्मसम्बिन्यः मवन्जित् क्षयम्बल्माइ।माउद्योष्ट्रां स्वार्थित्र न्पिरंड्रगठीर उन्मिद्धमाम सुना प्रतिस्थित असीरास्त्र व्हार्ग वार्ष्य स्थार विस्तित स्थार विस्तित स्थार विस्तित स्थार विस्तित स्थार विस्तित स्थार विस्तित न्तिनियान्ति मान्ति के ति स्ति मान्यानिक नियानिक नियान चेक्रिक्षित्वा क्रिक्ष सङ्ग्र न्राष्ट्रियाद्वीयंसे वड्स र लहें।।।क्ल वस नक्षनम्बर्गन्यवालेख्नुहिक्कितीलः सक्लामेड्क मन्यव्यवद्गितिहरीयम् मुङ्ग्प्री अधिप्रविद्वक्षीक्

10 AT! GIT P

पल्लीविष्टपल्लीकेन्याले: यज्यापन्यम्भिन्दः भ्राष्ट्रिके का उमामा स्मिशिशका का विद्युम्पनिका क्षण्यान्व वण्या अवापनी मानिकिन्तिः भण्याप्रिमियान् भर्मान्। इत्युम् द्रन्द्रिटिक् विस्त्रिक्ति विस्ति । विस्ति विस्ति । विस्ति विस्ति । वः सहित्वर देवस्य मार्थित मार्थित निर्मा के प्रति है प्रमुं सिर्णिकाइन्द्रसमानवरः रिलेयन मुन्नेण द्वीप अत्भाराष्ट्रकीर मिन्यार वृश्वा वर्ष हे सार

भाववु अतीम नग्र व्यापम ५० मः १००१ वन्न वस्त यन्भेनी हालामायुर्द विकलनरें. नेरमभाष्ट्र हानिर प्रीन्यम्यक्रवार्वनुन्यः।१८।५ व्यक्तिम्यद्वेगीव क्रि:क्येतमधु र ३३क्यानी पन्तरकार पान्य र लि इस्मकान्य वरा दिन्द्वः १०५१ क्रिक्निवनिष्ठ नामकहः भर लिख्याप्रिय क्रिपालिः देप्रमम् सम्प्रवाहता वृः न्त्रंतरम्य प्रविद्या । विद्या प्रतिक्षा प्रतिक्ष यादान्त्र त्याद्वान्त्र वित्र हिन्द्वान्त्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र लिंडी वर्गाण्या अन्त प्रया अपनि मेर एवर प्रमाल

图明

3

ग्रीसुरेश्य प्रम्थान प्रविकार स्थितिक गवन्युपर:1031मदिनाःपर्रारेन्गियंपानां भष्टवा मव्यव्यव : दिवस्कः भाउत्र विव्यव विवास यग्डियम् व्यामाण्यायम् वायायम् वायायम् कूरते गाउमणीनमिल गेरगीपि अरानिमण्यमन यद्द्विण उसच्कानाभी ११ भन्नः स्ट्रिंड ग्लाउप चिन्द्राः सर्प उत्रिः सि उभण्यां चय्चेत्रः पर्पेतः पत्रुचे स्यामेष्ठे वर्षा भेगाने चार्ति। १०॥

न दिश्वमष्ट कुर्नेक् नंवः पण्यात्व ए ने ध्रम्बरितः । वः विक्र नेवे हैं व्यम्भेनेषां भग्ये हुवः प्रमिष्ः मब्निम्। १९९१ मन्त्रिमंग्य गुनानिक्दः सेनारिक्यत वेतेष्ठित्वा : अऽहर्वन्याप्त्रित्तेत्वेत्तित्वेतिवे एड द वर्ग के : 1931 क्ल्युक् लेय् पद्र क्षिप कुछ दुन भिष्यतिष्ठ प्रेक्सः प्रमानस्त्वस्त्रिव्यविष्यम् ज्यान्द्रवाडवीवन्द्रः।१९१५म् नाम् प्रवादिन्तिनाम् प्रवादिन्तिनाम् प्रवादिन्तिनाम् प्रवादिन्तिनाम् प्रवादिन्तिन

中国 明

नंगिक्ष मानिया के के प्राप्ति निक निक निक्ष यानगा बिहालां हे मा हिंपुर नुक्स मामन मिन्न नियाकियोन स्या इस्पर्यम्पर्मिनकः १९ ना यः सुभ्यः मजन्यना वे स्वन्धः विष्वृत्तान मु:सदम् प्रमासे, उद्य उत्र पविष् वित्रिम समूद म्डिन्ने मुन्यव्येपरान्य भूगिमः १९७॥ अ।

िनमेठगव्य सामिक्ष सक्लाउर्य कृष्य सत्म इक्षाय, सन्य द्रातियु उत्यासन उत्तर प्रभाव व मित्रण्य रक्तन द्वारणील मीलक्रावाभावनी भनेयापियाय समस्परियात्राम्प्रिक्षेयुनिय मिन्द्रय सद्रमिल्य कुटण्य नुस्र स्ट्रिस य मार्थित ने मार्थित के का कर के का की मार्थ विश्वसक्य महक्लाहरन्य अना उरक्तिन याय अअम्प्राम्य सर्वेद्रक्षिक्षेत्र 4

6 母,中

वनम्य्य प्रवेद्य निम्य विद्युन स्पर्य द्व उद्धियम् प्रमापका या न व व व व व इटक्सर् अलिक्स्स्सर्भर्भर सम्दर्सन गज्ञ लाक्ष्म भाषा अधिक मान्य विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व विक्रियप्य ग्रह्मण्यमालिन् सक्लक्लाइ मित्रय सकललिक्क् सकललेक्क भक्तलक्ष्ण्य भक्तलक्ष्माकिल् सक लिंगमण्डा य अक्नावय उपन गाय अक्ल

लक्षकवर्यरा प्रस्कलने के क्म इन प्रसाद्ती व्यास्य मानुजीन् एवण्नाय निराजनाय निराम्य छनिम्लय निर्मेणय निरम्पय निर्मेण प्रमान्य राविरद्रमाय निक्षनाइय निम्पविष्यमेष् नित्पप्रवाय निर्वष्ट्र य निर्वाय निष्ठा ग्यानिरः उह्रविष्याद्वयनिः सङ्ग्वनिद्वया व नीम्माय निर्वणय निम्नु व निर्यापव निष्ठया 14:00 पनिविकलप्विहरण्य निव्यापनिमुलाय विःस

मयाया निग्रमय्य निम्पर्यवन्य निरम्भावन्य निरम् क्रमिद्रान्त्रः वास्त्र भागमा वास्त्र उस्मियाया राजराय नम्भन्मप्रभन्ना भनाव अग्यन छेन्व कालियाक माने हेन्व क्षणामाला वाप्ष भायन्य भाषान्त्रम् इभन्नायण्यायम् । किलियान डेमरमसाम्य द्वापमपरिण इसन्दी मर्ग्य न निकल्ड तम विमित्रम् द्वाप के मुक्र लायूर

नगम्बन्त नगम्बन्ध नगम्बन्ध नगम्बन्ध विद्वान चित्रम्व विक्रम्पिक्रम्य वित्त व्यावप्तन्ति में असित्र एं देवता का कि प्रति का सित्र के प्रति का में कवन्ययनम्य के व्यापद् रेय द्वार्य वियम द्वयं वमंवयमय यंग्याय्यमम् नव्याय्याः निवस्त्य विक्वय अन्तर्मिति विक्वित्य प्रम्निकि वि एप इस्निविध व धरियेष व अस्माननिष्य ध्वनिष्य । मान्त्रम् वर्गान्य मान्य मान्य वर्गान्य वर्षाय सम्बद्धा विविश्वप्विश्वष् त्रवा त्रवा त्रवा निवा विश्व विश्व

母门

गण्यस्मयमम्भय्भय् भम् व्यञ्जानम् विर्मुमन्मण्या सवानुस्य नवक्षत्वण्य मुस्ये हार माञ्चावप्रमाञ्च वल गरामुण्यायायायाय्यवायायायाः,नर्यः, नम्बिष्कव्यन्भाष्यम् राष्ट्रम् या सङ्ग्रव्य क्रारमिष्नभन्त्रभन्त्र ॥ इतिमन् एक निर्देशाल्य उन्मा विष्ट इस्त्रम् व्याय १६ उभवा स्वरंण प्रमान दर्भ वयादन भी ब्रांसक ज्या महत्त्र में बुक विष्यम् अस्य विष्युक्ति विष्युक्ति विष्युक्ति विष्युक्ति जेयुः र्युभद्दन् भद्दागद्वारेयः सष्टः साप्य

वस्तिक्तास्य प्राप्तिने अनुकार समन्तियहित विव्यनम् विण्यक्षम् वृत्रस्वेतिप्प्रद्वी सन्प उक्त इन्निम्हन्य प्राचित्र है। यह ने मिन्निम् पमंत्रक बंड : श्विधित्र द्वया बद्दा में बंक वय भुजिस मी क रवस्यवन्दर्भारः स्विह्न स्मि। अउठवन्य ॥ इड् Pag क्र विविधानियाम् मित्र मित्र हिमान्ति विविधान 09. म्पार्व मान्यं पद्भार्थ द्वार प्रमान के ना प्रकार के निम्

५० वज्र-ष्यु वले तु द्पित्रम्तिः सम्बर्भार्थः समुहेना यक्ष विषय अभन्द्रमञ्जनेषु वः भवेगी र पन्तरन भ अवाष्ट्रमध्या अनेषभा चुन्या । मित्रण गामिष्य मुंबाम्य वामेनुद्रभी समें हिम्य वेनहः भाग सह, रिद्वप्रियमिस्मिन्स्य स्थान्य ने निवानित न्मिकाः भाउसिन्दानम्मित्रान्यः । प्रमुद्धान् यनिव्युन्पाये रिक्सिनी सुद्रमेर ने प्रमुद चुलीववरी मिन्दी रिष्वनी वनकव्यन्य भिष

चनिन्त्रगाउद्गा उन्तिम् प्रम् भावभिम्कः



pur le par ch शेकाः भप्रिक्शल एडिस थानायु भारत इतिः भाषु विश्वालाउ म् भर्रा याग याभय लेका 13 53 कम्मीन श्रवाम अय नगा. असम् माठाभुड्ड रेडी भप्रेक्स हमकेडी, मीमापिक भाउनाई



